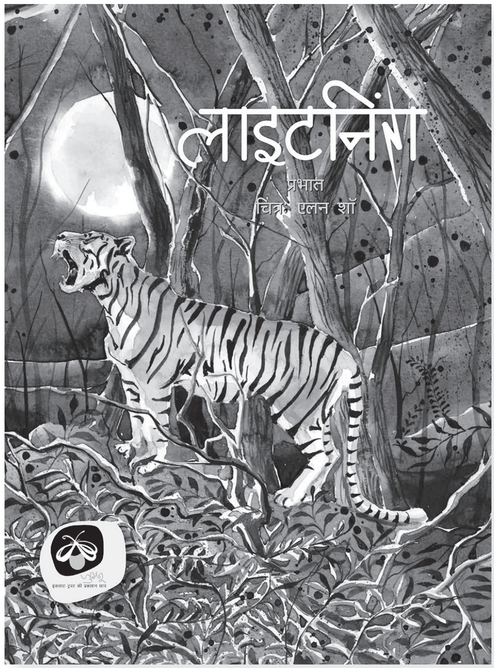
लाइटनिंग

कमलेश चंद्र जोशी

पढ़ना सीख रहे छोटे बच्चों के लिए बिग बुक तैयार की जाती हैं। इनको विकसित करने का उद्‌देश्य यह रहता है कि बच्चों का छपी सामग्री से जुड़ाव बने और वे किताबों को देखने, उलटने-पलटने, ख़ुद से पढ़ने के लिए प्रेरित हों। *लाइटनिंग* जैसी बिग बुक का स्कूली बच्चों से वास्ता बहुत कम पड़ता है। इस तरह की सामग्री स्कूलों में बहुत कम दिख पाती है। *लाइटनिंग* किताब को देखकर बच्चे पहले इस बात को लेकर ख़ुश होते हैं कि अरे, इतनी बड़ी किताब हमने पहले नहीं पढ़ी। यह किताब रणथम्भौर के जंगल में रहने वाली *लाइटनिंग* नाम की मशूहर बाघिन के रोज़मर्रा के जीवन की कहानी है। किताब की विषयवस्तु बच्चों से गहरे से जुड़ी हुई है और उन्हें नया अनुभव देने वाली भी है। बच्चों के लिए पढ़ना सीखने के शिक्षणशास्त्र के नज़रिए से भी देखें तो उसमें बच्चों के लिए अनुमान लगाने और किसी समस्या के हल सोचने के अच्छे मौक़े हैं। किताब के चित्र बहुत आकर्षक हैं और बच्चे इन चित्रों की डिटेल में डूब जाते हैं।



लाइटनिंग

लेखक : प्रभात

प्रकाशक : जुगनू तक्षशिला की प्रकाशन छाप

किताब में जंगल के चित्र को देखते हुए बच्चे बताते हैं कि इसमें साँप है, हिरन है, चिड़िया है और मन्दिर भी है। इसके साथ चित्रों में लाइटनिंग की दिनचर्या को अलग-अलग समय में देखना, उससे रिश्ता बनाने में बच्चों की बहुत मदद करता है। इससे लाइटनिंग उनके बीच जगह बना लेती है। यहाँ यह भी स्थापित होता है कि पूरी कायनात को ख़ूबसूरत बनाने में पशु-पक्षियों की भी जगह है।

जंगली जानवरों के प्रति हमारे मन जो एक सोच होती है कि वे ख़तरनाक होते हैं और हमला कर देते हैं, किताब से यह छवि भी कहीं टूटती है और उनके प्रति संवेदनशीलता का भाव उभरता है। उत्तराखंड के अख़बारों व समाचारों में अकसर यह पढ़ने को मिलता रहता है फलाँ जगह बाघ / गुलदार (तेन्दुआ) ने हमला कर दिया। इस कारण आम जनमानस में बाघ की छवि ख़तरनाक जानवर की ही रहती है। यही बात बच्चों के मन में भी रहती है। इसके चलते जानवरों के प्रति संवेदनशीलता उभारने वाला पक्ष छूट जाता है और बहुत-सी किताबों में वह केवल नैतिक उपदेश तक ही सीमित रह जाता है।

किताब के शुरुआती कुछ पृष्ठों के चित्रों व विवरणों में लाइटनिंग और रणथम्भौर के जंगल के गहरे रिश्ते को दिखाया गया। यह रिश्ता

जंगल के साथ-साथ गाँव के लोगों से भी है। वह कहीं पढ़ने वाले को यह संकेत भी देता है किसी जंगल का पशु-पक्षियों से क्या रिश्ता है। और इस रिश्ते को कहानी आगे और पुष्ट करती है और हमारी जानवरों के प्रति पूर्व मान्यताओं पर विचार करने और जानवरों को एक फ़र्क नज़रिए से देखने का मौक़ा देती है।

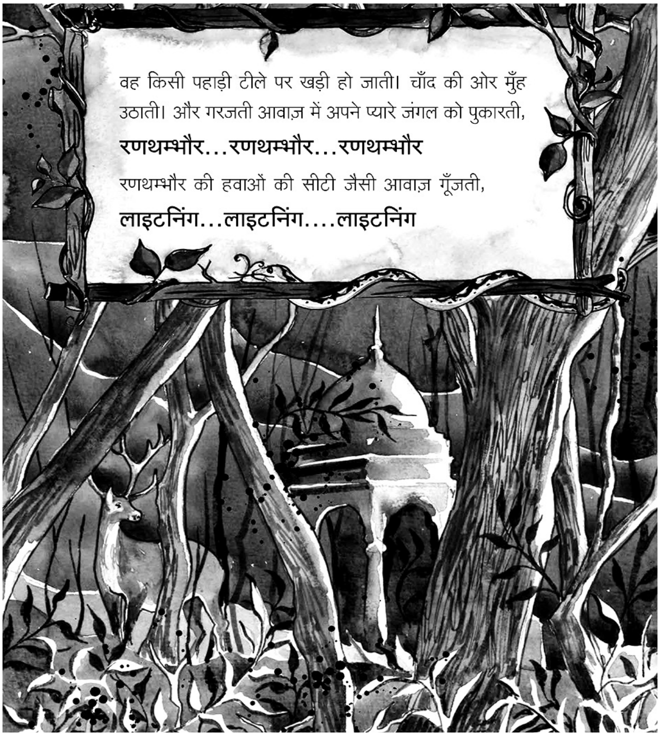
किसी स्कूल में बच्चों के साथ किताबों पर बातचीत शुरू करते है तो वे लाइटनिंग को शेर, चीता, टाइगर आदि बताते हैं। लेकिन पढ़ते हुए होने वाली बातचीत के दौरान वे समझ पाते हैं कि वह एक बाघिन है। एक विद्यालय में जब इस किताब को पढ़कर बच्चों को अनुमान लगाने का मौक़ा दिया गया कि लाइटनिंग जंगल में घूम रही है, पानी पीने जा रही है, पेड़ के नीचे बैठी हुई है तो अब कहानी में आगे क्या होगा? इसपर बच्चे कहते हैं कि यह किसी जानवर पर हमला कर देगी। आगे कहानी में होता इसका उलटा है और लाइटनिंग स्वयं एक कुएँ में गिर जाती है। बच्चे हतप्रभ होकर सोचने लगते हैं कि सब अच्छा-अच्छा चल रहा था! यह एकदम से क्या हो गया? बच्चे जो पहले उजले चित्र देख रहे थे और उन्हें देखकर ख़ुश हो रहे थे, तभी आगे का चित्र काला हो जाता है और बच्चों के बीच उदासी छा जाती है।

जब वे कुएँ के अन्दर का चित्र देखते हैं जिसमें लाइटनिंग गिर जाती है तो उन्हें झटका लगता है और वे सकते में आ जाते है। आगे वे और शिद्दत से लाइटनिंग के साथ होते हैं कि अब वह कैसे बचेगी? अब क्या होगा? यह कशमकश उन्हें बाँधे रहती है। आगे उनका यह अनुमान तब पक्का होता है कि गाँव वाले वहाँ इकट्ठा हो गए हैं और एक गाँव वाला मोबाइल से फ़ोन भी कर रहा है। तब उन्हें लगता है कि अब यह बच जाएगी। इस प्रकार यह किताब उन्हें बाँधे रहती है।

जब किताब के नाम के बारे में बच्चों से चर्चा होती है तो वे थोड़ा सोचते हैं और कहते हैं कि इसकी आँखें वैसी ही चमकती होंगी जैसी रात में बिल्ली की चमकती हैं, तभी इसका नाम *लाइटनिंग* पड़ा होगा। फिर उनसे यह बात होती है कि हो सकता है जब यह ज़ोर से दहाड़ मारती हो तो पानी बरसने के दौरान बिजली की गड़गड़ाहट होती हो और लाइट चमकती हो इसलिए इसका नाम यह पड़ा हो।

किताब की विषयवस्तु व साज-सज्जा को देखते हुए यह समझ में आता है कि यह पुस्तक छोटे बच्चों को किताब पढ़कर सुनाने की दृष्टि से एक उपयुक्त किताब है। इसको बच्चों को सुनाते हुए उनसे बात की जा सकती





है, अनुमान लगाने के मौक़े दिए जा सकते हैं, उन्हें चित्रों को ध्यान से देखना सिखाया जा सकता है और इनकी बारीक़ियों पर बातचीत की जा सकती है। इसपर बच्चों को अपने अनुभव जोड़ने व आगे सोचने को कहा जा सकता है और चर्चा की जा सकती है। कुल मिलाकर इसे बच्चों को किताब पढ़कर सुनाने वाली किताबों की श्रेणी में रखा जा सकता है।

रणथम्भौर के जंगल के आसपास के अनुभवों के आधार पर प्रभात द्वारा लिखी गई छोटी-सी कहानी को एलन शॉ ने काफ़ी श्रम और जतन से चित्रित किया है। बिग बुक बनाने की दृष्टि से इसके सम्पादन पर भी मेहनत की गई है। इस किताब को तक्षशिला प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। किताब का मूल्य साढ़े चार सौ रुपए है। किताब के काग़ज़, मुद्रण व चित्रों की गुणवत्ता की दृष्टि से इसे स्कूलों में रखा जाना आवश्यक लगता है।

कमलेश चंद्र जोशी प्राथमिक शिक्षा से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं। प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों– शिक्षक शिक्षा, बाल साहित्य, प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता आदि में गहरी रुचि। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर में कार्यरत।
सम्पर्क : kamlesh@azimpremjifoundation.org